अनुदेश जारी किए हैं। मैं वर्तमान मिली जुली सरकार की समय अवधि के बारे में शक नहीं करना चाहता। मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूं। जनादेश मिली जुली सरकार के लिए है और यह सरकार पांच वर्षों तक चलेगी। हम यह सिद्ध करने जा रहे हैं।

महोदय, यह आत्म प्रशंसा की बात नहीं है। मैं डेढ़ साल कर्नाटक का मुख्य मंत्री रहा। मैंने पिछले डेढ़ वर्ष में कर्नाटक में एक भी घोटाला नहीं होने दिया। मैं आपको यह बताना चाहता हूं, कि अन्य वरिष्ठ नेताओं की तुलना में मैं एक अनुभवहीन राजनीतिज्ञ हो सकता हूं, लेकिन इस सभा को मैं एक बात बता रहा हूं...**(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदयः कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं आपको इसकी अनुमति नहीं दे रहा हूं।

श्री एच.डी. देवेगौड़ा : महोदय, मुख्य मंत्री के रूप में मैंने क्या किया है, यह तो समय बतायेगा।

यह सरकार अल्पसंख्यकों, पिछड़े वर्गों के लोगों, कृषि से जुड़े लोगों के लिए क्या करने जा रही है, इसका उल्लेख हमारे कार्यक्रम में किया गया है।

मध्याह्न 12.00 बजे

कुछ देर के लिए इन्तजार कीजिए। मैं इस सदन से भाग नहीं रहा हूं।...**(व्यवधान)** कृपया इन्तजार कीजिए। हमें देखना चाहिए।

मुझे सदन की संरचना और इस सदन के बहुत से नेताओं की वरिष्ठता के बारे में पूरी जानकारी है। तीन पूर्व प्रधान मंत्री हैं और इन्द्रजीत गुप्तजी और सोमनाथ चटर्जी जैसे वरिष्ठत कामरेड हैं। मैं उनका नाम नहीं लेना चाहता। तीन वर्ष पूर्व मैं पीछे की बैंच पर, कोने में बैठा था। मैंने पीछे की सीट पर बैठ कर सभा की कार्यवाहियों को देखा था। जब ये सभी वरिष्ठ नेता बोला करते थे, तो मैं बहुत ध्यानपूर्वक सुनता था—मुझे सीखने दें और मैं वरिष्ठ नेताओं से कुछ सीखना चाहता हूं। अपने राजनैतिक जीवन में यह मेरी विशेषता है। मैं आपको स्पष्ट रूप से यह बताना चाहता हूं कि मैं यह नहीं कहने जा रहा हूं कि मैं बहुत विद्वान हूं। न मैं अर्थशास्त्री हूं और न ही वैज्ञानिक। लेकिन मैं यह कहना चाहता हूं कि मैं इस देश के लोगों की समस्याओं को जानता हूं। मैं आपको एक बात बताऊंगा। ...**(व्यवधान)** महोदय, इसी पद पर 17 अथवा 18 वर्षों तक कई नेताओं ने प्रधान मंत्री के रूप में कार्य किया है। और आज यदि मैं यहां पर 5 वर्ष के लिए हूं या 5 महीने के लिए हूं यह मापदण्ड नहीं होगा बल्कि इस देश की जनता के लिए एक प्रधान मंत्री की हैसियत से जो काम करूंगा वही महत्वपूर्ण होगा। मैं अपने समय का प्रत्येक मिनट और प्रत्येक घंटा देश के लिए लगाऊंगा और मैं यह साबित कर दूंगा कि मैं इस देश के गरीब तबके, दलित लोगों और अल्पसंख्यकों के साथ हूं। मैं यह करने जा रहा हूं। यही मेरी चिन्ता है। इस तरह मैं कार्य करता हूं। इस तरह से मैंने कार्य किया है और मैं यह पूरी ईमानदारी से कह रहा हूं। मैं वचन दे रहा हूं। यदि मैं कोई गलती करूं, तो यह सदन उसकी जांच कर सकता है। मैं आपको केवल बात बताना चाहता हूं। महोदय, मैं सभा का अधिक समय नहीं लेना चाहता क्योंकि और बहुत से सदस्यों को बोलना है। इस वाद-विवाद में और कई वरिष्ठ नेताओं को भाग लेना है और मेरे विचार से हमारे निवर्तमान प्रधान मंत्री, श्री अटल बिहारी वाजपेयी आज बोलेंगे। मैं केवल आपको यह आश्वासन देता हूं कि जो प्रश्न उठाये जायेंगे, उनका कल में विस्तृत उत्तर दूंगा और इस सभा द्वारा अपेक्षित सभी जानकारी मैं सभा को प्रदान करूंगा।

इन शब्दों के साथ, मैं बड़ी विनम्रता से इस सदन के सभी माननीय सदस्यों से अनुरोध करता हूं कि वे इस विश्वास प्रस्ताव को स्वीकृत करें।

श्री संतोष मोहन देव (सिल्चर) : मैं जानना चाहता हूं कि इस परिचर्चा की समय-सीमा क्या है? आपने सात घंटे बताया है। अभी वाजपेयी जी बोलने के इच्छुक नहीं हैं। किसी ने मुझे बताया कि वह कल बोलेंगे। पहले यह माना जा रहा था कि ये सभी वक्ता आज ही इन सात घन्टों के अन्दर ही बोलेंगे।...**(व्यवधान)** आज जो भी निर्णय लेंगे हम सभी उसको मानेंगे। परन्तु, कृपया आप यह बताइये कि आपका निर्णय क्या है क्योंकि कल की बैठक में यह हमने आपके ऊपर छोड़ दिया था और आपने कहा था कि आप हमें सूचित करेंगे। हमें सूचित नहीं किया गया है। अगर मैं आपके निर्णय लेने के अधिकार क्षेत्र में दखलअंदाजी नहीं कर रहा तो आप कृपया हमें अपने निर्णय से अवगत कराएं ताकि हम भी अपने वक्ताओं के बारे में निर्णय ले सकें।

अध्यक्ष महोदय : मैंने घोषणा कर दी है कि सात घन्टे निर्धारित किये गए हैं। प्रत्येक दल को, जिसमें छोटे दल भी शामिल हैं, समय दिया गया है और संख्यानुसार ही आबंटित किया गया है। मेरे विचार में कुछ मिनट पश्चात् आपको यह ब्यौरा मिल जाएगा। अगर आप आबंटित समय का ध्यान रखते हुए चलेंगे तो भोजनावकाश के बिना हम आज ही परिचर्चा समाप्त कर सकेंगे।

श्री राम नाईक (मुम्बई उत्तर) : जहां तक भोजनावकाश और समय का संबंध है, हमने कल ही आपको अपने विचार स्पष्ट कर दिये थे। मैं यह इसलिये कह रहा हूं क्योंकि समिति में हुई चर्चा को यहां उठाया जा रहा है। कल ही हमने आपको स्पष्ट कर दिया था कि हम चाहते हैं कि परिचर्चा दो दिल चले। हमने यह भी स्पष्ट कर दिया था कि हमारी तरफ से श्री जसवंत सिंह चर्चा आरम्भ करेंगे और श्री वाजपेयी कल बोलेंगे। इन सभी बातों को अति स्पष्ट कर दिया गया था। इसलिये, हम चाहते हैं कि परिचर्चा कल तक चले। हमने यह कल ही कह दिया था। हम यह आपके और सभा के ध्यान में इसलिये ला रहे हैं क्योंकि समिति में हुई चर्चा को माननीय सदस्य यहां पर उठा रहे हैं।...**(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : हमको आबंटित समयावधि से चलना चाहिये। आप कल अथवा आज जब चाहें, बोल सकते हैं परन्तु आबंटित समय के अन्दर ही बोलना होगा। भा.ज.पा. को एक घन्टा चौवन मिनट आबंटित किए गए हैं। इस समयावधि में कौन बोलेगा और कितनी देर बोलेगा, यह आपको सुनिश्चित करना है।

श्री आई.डी. स्वामी (करनाल) : यह एक महत्वपूर्ण चर्चा है। सम्पूर्ण विश्व की आंखें इस पर टिकी हुई हैं।...**(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री जय प्रकाश (हिसार) : अध्यक्ष महोदय, आखिर हम भी तो जन प्रतिनिधि हैं, कहीं से चुनकर आये हैं।...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

सरदार सुरजीत सिंह बरनाला (संगरूर) : अध्यक्ष महोदय, ऐसा संकेत क्यों दिया जा रहा है कि सरकार चर्चा से बचना चाहती है? ...**(व्यवधान)** ऐसा आभास कराया जा रहा है कि सरकार सभा में चर्चा को जल्दी समाप्त कराना चाहती है। ऐसा संकेत नहीं दिया जाना चाहिये। महोदय, मेरा यह निवेदन है।

श्री एच.डी. देवेगौड़ा : अध्यक्ष महोदय, मैं एक विनम्र निवेदन करना चाहता हूं। पूर्व प्रधान मंत्री और विपक्ष के नेता समेत कई माननीय सदस्यों ने पूर्व की कुछ घटनाओं के ऊपर प्रकाश डालने के लिये कहा है। पिछले दस दिनों में, हमने कोई भी गलती नहीं की है। अगर हमने कोई गलती की है, तो हम उसे स्वीकार करने के लिये तैयार हैं।

यदि माननीय भूतपूर्व प्रधान मंत्री एवं विपक्ष के नेता कल बोलना चाहते हैं तथा अगर वह पिछली सरकार से संबंधित कुछ मुद्दे उठाना चाहते हैं, तो उनका उत्तर देने से पहले, मुझे संबंधित दस्तावेजों को अध्ययन करना आवश्यक होगा। विपक्ष के माननीय नेता द्वारा जो मुद्दा उठाया जायेगा उसके सभी पहलुओं के विषय में इस सभा में उत्तर देने में आज मैं असमर्थ हूं। इसी वजह से विपक्ष के माननीय नेता से मेरा यह विनम्र निवेदन है कि यदि वह विगत से संबंधित कोई मुद्दा उठाना चाहते हैं, तो वह आज ही ऐसा कर लें। तभी मैं सारा मामला समझ पाऊंगा तथा बाद में इस सभा के समक्ष उत्तर दे पाऊंगा। मैं बिल्कुल साफ तौर पर यह कहना चाहता हूं कि मैं कोई इतना कुशल राजनीतिज्ञ नहीं हूं। उत्तर देने से पहले, मुझे रिकार्डों का अध्ययन करना होगा। यदि वह यह मुद्दा कल उठाना चाहते हैं तथा सभी विषयों पर सरकार से जवाब मांगते हैं, तो मेरे जैसे व्यक्ति के लिए ऐसा कर पाना अत्यंत दुष्कर होगा। मेरा उनसे यही अनुरोध है कि कृपया इस बारे में विचार करें। यदि वह विगत से संबंधित कोई मुद्दा उठाना चाहते हैं, तो उन्हें ऐसा आज ही करना चाहिए तथा अपनी बात आज ही समाप्त करनी चाहिए। मैं सभी बातों का जवाब देने के लिए तैयार हूं। किसी बात को छिपाने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। मेरी तो यही प्रार्थना है।

अध्यक्ष महोदय : मेरे विचार से यह अनुरोध उचित है।...

(व्यवधान)

श्री प्रमोद महाजन : महोदय, यह बिल्कुल अनुचित है। ...**(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, प्रधान मंत्री जी ने मुझसे एक अपील की है और उन्होंने कहा है कि अगर पुराने मामले मैं उठाना चाहता हूं तो उनका जवाब देना उनके लिए कल सम्भव नहीं होगा।

मेरा निवेदन है कि जो पुराने मामले हैं और जो पुराने मामलों के लिऐ जिम्मेदार थे, वह इस सदन में मौजूद हैं, वह जवाब दे सकते हैं, अपनी सफाई दे सकते हैं। आपने भी उनके साथ गठबन्धन किया है तो आप भी बच नहीं सकते हैं। लेकिन मैं पुराने मामले उठाने पर जोर नहीं दूंगा। मैं कुछ और मुद्दे खड़े करूंगा। उदाहरण के लिए, अध्यक्ष महोदय, मैं राष्ट्र की सुरक्षा का मामला उठाना चाहता हूं।

एक माननीय सदस्य : आज उठाइये।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अगर प्रधान मंत्री को पुराना रिकार्ड देखना है तो मैं उनकी मदद नहीं कर सकता। यह बहस कल चलेगी।

एक मानीय सदस्य : नहीं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अगर मैं सी.टी.बी.टी. के बारे में बोलना चाहता हूं और मैं सरकार से उसकी नीति का स्पष्टीकरण चाहता हूं तो क्या मुझे यह अधिकार नहीं है? आप इस पर रोक लगा रहे हैं। इसका जबाव देने के लिए आपको अध्ययन करना पड़ेगा, इसलिए आज नहीं हो सकता। मेरा निवेदन है कि चर्चा कल भी चलानी चाहिए।

[अनुवाद]

श्री संतोष मोहन देव (सिल्चर) : अध्यक्ष महोदय, मैं एक बात यह कहना चाहता हूं कि ऐसी बातों पर निर्णय लेना सत्तारूढ़ दल की मर्जी पर निर्भर करता है। मैं एक बात स्पष्ट करना चाहता हूं। यदि आप श्री वाजपेयी को कल बोलने की अनुमति देते हैं, तो यह आपका निर्णय है। इसके बाद, मुझे यह फैसला करना है कि हमारे नेता कब बोलेंगे। फिर, मैं उनका नाम कल बोलने के लिए रखना चाहूंगा... **(व्यवधान)**

[हिन्दी]

प्रो. रासा सिंह रावत (अजमेर) : अध्यक्ष महोदय, संतोष मोहन देव जी बचाव के लिए गलत तर्क दे रहे हैं।...**(व्यवधान)**